ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 09
फाल्गुन कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत् 2074
कलि संवत् 5118
05 फरवरी 2018 से 21 फरवरी 2018
दयानन्दाब्द : 193
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,118
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

आर्यसमाज की ओर से कृतज्ञ राष्ट्र को 69वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 194वें जन्मोत्सव के अवसर पर
फल्गुन कृष्ण 10 तद्नुसार
शनिवार 10 फरवरी, 2018

महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि–पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मोहल्ले में घर–घर जाकर विशेष यज्ञों का आयोजन करें। साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के संबंध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें।

उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी हो सके।

प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज'फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और बाल प्रतियोगिताओं का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग ऋषिपर्व को स्मरण दिलाने के लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार
के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने की अभी से तैयारी प्रारंभ कर दें।

महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य का वितरण के लिए भी योजना बनाएं। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें। प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद् स्तर पर आयोजन करें ।

यह अंक आर्य समाज अजमेर (केसरगंज) अजमेर के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है।
सम्पादक मण्डल आर्य समाज अजमेर (केसरगंज) अजमेर के समस्त पदाधिकारियों का एतदर्थ धन्यवाद ज्ञापित करता है।

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

आर्य समाज अजमेर की स्थापना एवं कार्य

1 आर्य समाज अजमेर की स्थापना माघशुक्ला 14 संवत 1937 रविवार दिनांक 13 फरवरी 1881 को हुई थी इसका नाम "आर्य समाज अजमेर" रखा गया था। स्थापना काल के दिनो में आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग लाखन कोटड़ी में वर्तमान के दर्जियों के मन्दिर के पीछे चांदी कुएं के मार्ग पर हटड़ी के चौक में होते थे। यह लक्ष्मीनारायण जी दरजी के मकान में था। आर्य समाज अजमेर को तत्कालीन राजपुताने और वर्तमान राजस्थान के सबसे पुराने और प्रथम आर्य समाज होने का गौरव प्राप्त है। जिसकी स्थापना स्वामी जी के जीवन काल में हो चुकी थी। जयपुर में भी आर्य समाज अकुंरित तो हुआ था परन्तु रियासती कानूनों के कारण प्रारम्भ में उसका नाम "वैदिक धर्म सभा" ही रखा गया जो कालान्तर में आर्य समाज नाम से विभूषित किया गया। अपनी स्थापना के समय से ही कई वर्षों तक समस्त राजस्थान, मध्य भारत और रियासतों में आर्य समाज का सारा कार्य यही समाज करती थी।

2. आर्य समाज अजमेर के संस्थापक सदस्यः— 1. श्री पदम चन्द जी 2. श्री राय भागमल जी 3. एकस्ट्रा ज्यूडीशियल कमीशनर 4. सरदार बहादुर 5. अमीचन्द जी 6. सरदार भगत सिंह जी 7. मसूदापतिरावबहादुर जी 8. मुंशी हरनाम सिंह 9. बाबू मथुरा प्रसाद जी 10. प॰ कमल नयन जी 11. श्री श्याम सुन्दर जी 12. प॰ मुन्ना लाल जी 13. श्री जेठमल जी सोढ़ा आदि प्रमुख थे।

3. आर्य समाज भवन का निर्माणः— 13 जुलाई 1882 की अन्तरंग सभा के निर्णयानुसार आर्य समाज अजमेर के भवन के लिए 3,000 रू की आवश्यकतानुसार स्वीकृति एवं स्थान केसरगंज निश्चित हुआ। वर्तमान स्थान केसरगंज चक्र पर जमीन लेने के पश्चात् 1884 ई॰ में भवन निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ और 1888 ई॰ में आर्य समाज (मन्दिर) भवन निर्मित होकर तैयार हो गया। सन् 1888 ई॰ में डी॰ए॰वी॰स्कूल की स्थापना के बाद उसका पूरा प्रबंध आर्य समाज अजमेर द्वारा होता था। दयानन्द बाल सदन की स्थापना 1895 ई॰ में तथा मुन्नालाल नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना भी आर्य समाज ने की। सन् 1887 ई॰ में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्थापना की गई और 1926 ई॰ तक प्रायः सभी अधिकारी आर्य समाज अजमेर के प्रतिनिधि होते थे। उसका कार्यालय भी इसी समाज में था। सन् 1915 ई॰ में श्री चान्दकरण जी शारदा एवं कर्मवीर प॰ जियालाल जी का प्रवेश आर्य समाज अजमेर में लगभग एक ही साथ हुआ था।

4. कर्मवीर प॰ जियालाल युगः— सन् 1926 ई॰ से लेकर 1961 तक का 35 वर्ष का समय कर्मवीर प॰ जियालाल जी का युग कहा जा सकता है। प॰जियालाल जी के काल में आर्य समाज और उससे सम्बन्धित संस्थाओं का अभूतपूर्व विस्तार हुआ। उन्होने अपने अथक परिश्रम, साहस से आर्य जगत तथा अजमेर में अपनी धाक जमा दी। हिन्दू—मुस्लिम संघर्ष में उन्होने जिस वीरता से हिन्दुओं की रक्षा की इसके कारण मुसलमान उन्हें हिन्दू पठान कहते थे और हिन्दू अपना संरक्षक मानते थे।

5. उत्सव एवं प्रीतिभोज :— उनके समय में आर्य समाज के उत्सव और विशाल नगर कीर्त्तन सारे देश में प्रसिद्ध हुए थे। जातपात और छुआछूत को मिटाने के लिए 1926 से लेकर 1935 तक आनासागर बारादरी पर उन्होंने पांच प्रीतिभोजों का आयोजन किया जिनमें बीस हजार तक सब वर्णों के हिन्दुओं ने एक साथ भोजन किया और अस्पृश्य समझें जाने वाले व्यक्तियों ने दाल—चावल जैसा कच्चा समझा जाने वाला भोजन परोसा। इस काल में रायबहादुर प॰ मिट्ठन लाल जी भार्गव श्री गुलराज गोपाल गुप्त डा॰ सूर्यदेव शर्मा, श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले व रमेश चन्द्र जी शास्त्री उनके प्रमुख सहयोगी रहे। श्री भार्गव जी लगभग 40 वर्ष तक आर्य समाज अजमेर तथा उसकी आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रधान रहे।

हैदराबाद सत्याग्रह सन् 1938ई॰ में प्रारम्भ हुआ जिसमें प॰ जी ने दो स्पेशल ट्रेनें (राजगुरू एवं देवेन्द्र) सत्याग्रह के लिए भेजी सन् 1957 में अपनी वृद्धावस्था एंव अस्वस्थता की चिन्ता किये बगैर 400 सत्याग्रहियों की एक स्पेशल ट्रेन लेकर पंजाब सरकार के हिन्दी विरोधी आन्दोलन का विरोध करने के लिये अम्बाला जेल में दो महीने तक गिरफ्तारी दी। सन् 1933ई॰ में आर्य समाज की स्वर्ण जयन्ति और 1935 में अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनी के दो अत्यन्त विशाल समारोह करके अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। सन् 1947 में सिन्ध से आये हुए हिन्दू शरणार्थियों की सहायता के लिये उनके नेतृत्व में आर्य समाज ने व्यवस्थित रूप से महिनो सेवा,सुरक्षा तथा पुनर्वास का कार्य किया अजमेर का दयानन्द कालेज प॰जियालाल जी की सेवा और कीर्ति का चिरस्थायी स्मारक है।

6. प्राचार्य दत्तात्रेय जी काल सन् 1961से लेकर सन् 2005 तक का काल आर्य समाज अजमेर में लगभग 45 वर्ष तक प्राचार्य दत्तात्रेय जी वाब्ले का रहा। प॰ जियालाल जी के आकस्मिक निधन के बाद आर्यसमाज और उससे सम्बन्धित दयानन्द बाल सदन, डी॰ए॰वी हाई स्कूल, दयानन्द कालेज आदि लगभग एक

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। — अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय—व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार—बार सोचना चाहिए।

दर्जन शिक्षण सस्थाओं का सुचारू रूप से संचालन किया। दयानन्द कालेज के वाब्ले जी लगभग 25 वर्ष तक प्राचार्य रहे। पंजाब विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति श्री सूरजभान जी के शब्दों में "यह एक छोटा विश्वविद्यालय बन गया है।" आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में लगभग 5000 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते रहे है। और लगभग 250 कर्मचारी,शिक्षक व प्राध्यापक कार्यरत रहे हैं। इनके कार्यकाल को आर्य समाज का "विकास" काल कहें तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

7. शताब्दी समारोह का भव्य आयोजनः– आर्य समाज की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देश–विदेश की भांति अजमेर में भी शताब्दी समारोह का 3 अप्रेल से 12 अप्रेल 1975 तक श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले की अध्यक्षता में गठित "आर्य समाज स्थापना शताब्दी समिति के तत्त्वावधान में भव्य आयोजन किया गया। श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले के श्री कृष्ण राव जी वाब्ले, पूर्व सांसद श्री रासा सिंह जी, डा॰ सूर्यदेव शर्मा, श्री मन्जूनाथ जी शास्त्री, श्री शिवचन्द सिंह जी, डा॰बाबूराम शास्त्री, प्रो॰ श्री बुद्धि प्रकाश जी आदि प्रमुख थे। वाब्ले जी रेडक्रास के वर्षों चेयरमेन रहे।

8. वर्तमान काल सन् 16 मार्च 2005 को श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले के स्वर्गवास के उपरान्त वरिष्ठ उपप्रधान तत्कालीन सांसद प्रो॰ श्री रासा सिंह जी को आर्य समाज अजमेर का प्रधान सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया। इस काल में आर्य समाज अजमेर का 125 वाँ स्थापना दिवस वेद प्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाये जाते है। इसी समाज के अन्तर्गत गौतम आश्रम के सामने आर्य समाज पुष्कर (वैदिक सत्संग आश्रम) गत् काफी वर्षों से सचांलित है। इस समय श्री नन्दकिशोर जी की देखरेख में यहां अनेक गतिविधियाँ संचालित हैं। 31दिसम्बर 2017 को माननीय प्रधान श्री रासासिंह जी के करकमलों से आर्य साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन किया गया। हमारा निवेदन है कि जो भी आर्य भाई–बहन पुष्कर जाते हैं वे आर्य समाज पुष्कर जरूर जायें और वहाँ की गतिविधियों का अवलोकन कर सुझाव देने का कष्ट करें। आर्य समाज की समिति में इस समय प्रो॰ रासा सिंह प्रधान, श्री नवीन मिश्र उपप्रधान, श्री चन्दराम आर्य मन्त्री, श्री चिरंजीलाल उपमंत्री, डा॰ आराधना आर्य उपमंत्री महिला प्रकोष्ठ श्री किशन लाल जी कोषाध्यक्ष श्री श्रद्धानन्द शास्त्री अकेंक्षक, श्री डा॰ राधेश्याम शास्त्री पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री कृपाल सिंह अन्तरंग सदस्य, श्रीमती मोहिनी आर्या अन्तरंग सदस्य, डा॰ मोक्षराज अन्तरंग सदस्य,डा॰ भागचन्द गर्ग अन्तरंग सदस्य, प्रो॰ सत्यपाल पिलानिया आदि अन्तरंग सदस्य है। जो पूर्ण निष्ठा से आर्य समाज के सम्पूर्ण कार्यों में सहयोग दे रहे है। जो अनुकरणीय है।

चांदराम आर्य
मंत्री, आर्य समाज अजमेर

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जन्मदिवस (23 जनवरी) पर पुण्य स्मरण

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम 'जानकीनाथ बोस' और माँ का नाम 'प्रभावती' था। उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेजिडेंसी कॉलेज और स्काटिश चर्च कॉलेज से हुई, और बाद में सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। 1921 में सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चन्द्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे, वहीं सुभाष चन्द्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे। महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस के विचार भिन्न–भिन्न थे लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते थे कि महात्मा गाँधी और उनका मकसद एक है, यानी देश की आजादी।

1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया। यह नीति गाँधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं थी। 1939 में बोस पुनः एक गांधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर विजयी हुए। गांधी ने इसे अपनी हार के रूप में लिया। उनके अध्यक्ष चुने जाने पर गांधी जी ने कहा कि बोस की जीत मेरी हार है। गांधी के लगातार विरोध को देखते हुए उन्होंने स्वयं कांग्रेस छोड़ दी।

बोस का मानना था कि अंग्रेजों के दुश्मनों से मिलकर आजादी हासिल की जा सकती है। उनके विचारों के देखते हुए उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कोलकाता में नजरबंद कर लिया लेकिन वह अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जा पहुँचे। सक्रिय राजनीति में आने से पहले नेताजी ने पूरी दुनिया का भ्रमण किया। वह 1933 से 36 तक यूरोप में रहे। यूरोप में यह दौर था हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद का। नाजीवाद और फासीवाद का निशाना इंग्लैंड था, जिसने पहले विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी पर एकतरफा समझौते थोपे थे। वे उसका बदला इंग्लैंड से लेना चाहते थे। भारत पर भी अंग्रेजों का कब्जा था और इंग्लैंड के खिलाफ लड़ाई में नेताजी को हिटलर और मुसोलिनी में भविष्य का मित्र दिखाई पड़ रहा था। दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। उनका मानना था कि स्वतंत्रता हासिल करने के लिए राजनैतिक गतिविधियों के साथ–साथ कूटनैतिक और सैन्य सहयोग की भी जरूरत पड़ती है।

नेताजी के नाम से प्रसिद्ध सुभाष चन्द्र ने सशक्त क्रान्ति द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से 21 अक्टूबर, 1943 को आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की तथा आजाद हिन्द फौज का गठन किया इस संगठन के प्रतीक चिह्न पर एक झंडे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बना होता था। नेताजी अपनी आजाद हिंद फौज के साथ 4 जुलाई 1944 को बर्मा पहुँचे। यहीं पर उन्होंने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' प्रसिद्ध नारा दिया। भारत माँ के ऐसे अमर सपूत, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सच्चे सिपाही नेताजी सुभाष चन्द्रबोस को आर्यसमाज का शत–शत नमन।

स्वराज्य केसरी आर्य नेता लाला लाजपत राय जन्मदिवस (28 जनवरी) पर पुण्य स्मरण

आर्यसमाज मेरे लिए माता के सामान हैं और वैदिक धर्म मुझे पिता तुल्य प्यारा है– लाला लाजपत राय

आजादी के महानायकों में लाला लाजपत राय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार कराता है। अपने देश धर्म तथा संस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी। उनके बहुविध क्रिया कलाप में साहित्य–लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। एक साधारण से परिवार में लाला जी का जन्म 28–जनवरी–1865 को पंजाब राज्य के मोंगा जिले के दुधिके गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री लाला राधा किशन आजाद जी सरकारी स्कूल में उर्दू के शिक्षक थे जबकि उनकी माता गुलाब देवी धार्मिक महिला थी। लाला राधा किशन जी के विषय में लाला जी स्वयं लिखते हैं की मेरे पिता पर इस्लाम का ऐसा रंग चढ़ा था कि उन्होंने रोजे रखना शुरू कर दिया था। सौभाग्य से मुझे आर्यसमाज का साथ मिला जिसके कारण मेरा परिवार मुस्लमान बनने से बच गया। लालाजी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे व धन, आदि की अनेक कठिनाइयों के पश्चात् भी उन्होंने उच्चशिक्षा प्राप्त की। 1880 में कलकत्ता यूनिवर्सिटी व पंजाब यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षाएँ पास करने के बाद उन्होंने लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिला ले लिया व कानून की पढाई प्रारंभ की, लेकिन घर की आर्थिक हालत ठीक न होने के कारण दो वर्ष तक उनकी पढाई बाधित रही। लाहौर में बिताया गया समय लाला जी के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ और यहीं उनके भावी जीवन की रूप–रेखा निर्मित हो गयी ! उन्होंने भारत के गौरवमय इतिहास का अध्ययन किया और महान भारतीयों के विषय में पढ़कर उनका हृदय द्रवित हो उठा। यहीं से उनके मन में राष्ट्र प्रेम व राष्ट्र सेवा की भावना का बीजारोपण हो गया। कानून की पढाई के दौरान वह लाला हंसराज जी व पंडित गुरुदत्त जी जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आये। वे तीनों अच्छे मित्र बन गए और 1882 में आर्य समाज के सदस्य बन गए। लालाजी के व्यक्तित्व को यदि बहुत कम शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास करें तो उपयुक्त शब्द होंगे कि वे देशभक्ति की सजीव प्रतिमा थे। उनके लिए धर्म, मोक्ष, स्वर्ग और ईश्वर पूजा– सभी का अर्थ था देश सेवा, देशभक्ति और देश से प्यार। ऐसी महान आत्मा को उनके जन्मदिवस पर शत–शत नमन।

लघु गुरूकुल का आयोजन

आर्य समाज कोटपूतली के द्वारा लक्ष्मीनारायण धर्मशाला में आयोजित दो दिवसीय लघु गुरूकुल 27–28 जनवरी सत्र का आयोजन किया गया। इस लघु गुरुकुल में स्थानीय युवाओं को हमारी प्राचीन विद्या के वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी गई। राष्ट्रीय आर्य निर्माता सभा व गुरुकुल टटेसर दिल्ली के संचालक आचार्य हनुमत प्रसाद उपाध्याय एवं आचार्य रामबीर जी शास्त्री ने कहा वेद शास्त्रों के मन्त्रों का हिंदी में अनुवाद करते हुए गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति की जानकारी दी।

दिनांक 27 जनवरी शनिवार को राष्ट्रीय प्रार्थना के द्वारा इस दो दिवसीय लघु गुरुकुल का शुभारंभ किया गया है आचार्य जी ने व्यसनों के बारे में बताया तथा अनेक युवाओं ने जीवन भर किसी भी प्रकार का नशा व व्यसन नहीं करने का संकल्प लिया। आचार्य रामवीर जी ने यज्ञ के महत्व को बताते हुए कहा कि यज्ञ हमारी वैदिक संस्कृति का आधार है। और धर्म हमारा कर्तव्य हैं तथा यह राष्ट्र हमारी मातृभूमि पितृभूमि व कर्म भूमि होने से ये देश हमारा अपना है ।

रमेश आर्य
प्रवक्ता आर्य समाज, कोटपूतली

आर्य समाज फूलिया कलां भीलवाडा विवाद का पटाक्षेप

विशिष्ट न्यायालय शाहपुरा में वाद संख्या 54/2013 (67) सन् 2000 से चल रहा था उसमें दिनांक 19.12.2017 को अंतिम निर्णय आर्य समाज के पक्ष में आने से आर्य समाज की जीत हुई हैं। उसमें बाद में आर्य समाज भवन के द्वितिय मंजिल पर कमरे का निर्माण एवं बरामदे में हाल का कार्य प्रगति पर हैं।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

संसारभर के विकासवादियों से प्रारंभिक प्रश्न

अभी हाल में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री माननीय डॉ. सत्यपालसिंहजी के इस कथन कि मनुष्य की उत्पत्ति बन्दर से नहीं हुई, सम्पूर्ण भारत के बुद्धिजीवियों में हलचल मच रही है। कुछ वैज्ञानिक सोच के महानुभाव इसे साम्प्रदायिक संकीर्णताजन्य रूढ़िवादी सोच की संज्ञा दे रहे हैं। मैं उन महानुभावों से निवेदन करता हूँ कि मंत्रीजी का यह विचार रूढ़िवादी नहीं बल्कि सुदृढ़ तर्कों पर आधारित वैदिक विज्ञान का ही पक्ष है। ऐसा नहीं है कि विकासवाद का विरोध कुछ भारतीय विद्वान् ही करते हैं अपितु अनेक यूरोपियन वैज्ञानिक भी इसे नकारते आये हैं। मैं इसका विरोध करने वाले संसारभर के विकासवादियों से प्रश्न करना चाहता हूँ। ये प्रश्न प्रारम्भिक हैं, इनका उत्तर मिलने पर और प्रश्न किये जायेंगे :–

शारीरिक विकास

१. विकासवादी अमीबा से लेकर विकसित होकर बन्दर पुनः शनैः–२ मनुष्य की उत्पत्ति मानते हैं। वे बताएं कि अमीबा की उत्पत्ति कैसे हुई?

२. यदि किसी अन्य ग्रह से जीवन आया, तो वहाँ उत्पत्ति कैसे हुई? जब वहाँ उत्पत्ति हो सकती है, तब इस पृथ्वी पर क्यों नहीं हो सकती?

३. यदि अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से किसी ग्रह पर हुई, तब मनुष्य के शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती?

४. उड़ने की आवश्यकता होने पर प्राणियों के पंख आने की बात कही जाती है परन्तु मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ, उड़ने हेतु हवाई जहाज बनाने का प्रयत्न करता रहा है, परन्तु उसके पंख क्यों नहीं उगे? यदि ऐसा होता, तो हवाई जहाज के अविष्कार की आवश्यकता नहीं होती।

५. शीत प्रदेशों में शरीर पर लम्बे बाल विकसित होने की बात कही जाती है, तब शीत प्रधान देशों में होने वाले मनुष्यों के रीछ जैसे बाल क्यों नहीं उगे? उसे कम्बल आदि की आवश्यकता क्यों पड़ी?

६. जिराफ की गर्दन इसलिए लम्बी हुई कि वह धरती पर घास सूख जाने पर ऊपर पेड़ों की पत्तियां गर्दन ऊँची करके खाता था। जरा बताएं कि कितने वर्ष तक नीचे सूखा और पेड़ों की पत्तियां हरी रहीं? फिर बकरी आज भी पेड़ों पर दो पैर रखकर पत्तियां खाती है, उसकी गर्दन लम्बी क्यों नहीं हुई?

७. बंदर के पूंछ गायब होकर मनुष्य बन गया। जरा कोई बताये कि बंदर की पूंछ कैसे गायब हुई? क्या उसने पूंछ का उपयोग करना बंद कर दिया? कोई बताये कि बन्दर पूंछ का क्या उपयोग करता है और वह उपयोग उसने क्यों बंद किया? यदि ऐसा ही है तो मनुष्य के भी नाक, कान गायब होकर छिद्र ही रह सकते थे। मनुष्य लाखों वर्षोंसे से बाल और नाखून काटता आ रहा है, तब भी बराबर वापिस उगते आ रहे हैं, ऐसा क्यों?

८. सभी बंदरों का विकास होकर मानव क्यों नहीं बने? कुछ तो अमीबा के रूप में ही अब तक चले आ रहे हैं, और हम मनुष्य बन गये, यह क्या है?

९. कहते हैं कि सांपों के पहले पैर होते थे, धीरे–२ वे घिस कर गायब हो गये। जरा विचारों कि पैर कैसे गायब हुए, जबकि अन्य सभी पैर वाले प्राणियों के पैर बिल्कुल नहीं घिसे।

१०. बिना अस्थि वाले जानवरों से अस्थि वाले जानवर कैसे बने? उन्हें अस्थियों की क्या आवश्यकता पड़ी?

११. बंदर व मनुष्य के बीच बनने वाले प्राणियों की श्रंखला कहाँ गई?

१२. विकास मनुष्य पर जाकर क्यों रुक गया? किसने इसे विराम दिया? क्या उसे विकास की कोई आवश्यकता नहीं है?

बौद्धिक व भाषा सम्बन्धी विकास

1. कहते हैं कि मानव ने धीरे–2 बुद्धि का विकास कर लिया, तब प्रश्न है कि बन्दर व अन्य प्राणियों में बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?

2. मानव के जन्म के समय इस धरती पर केवल पशु पक्षी ही थे, तब उसने उनका ही व्यवहार क्यों नहीं सीखा? मानवीय व्यवहार का विकास कैसे हुआ? करोड़ों वनवासियों में अब तक विशेष बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?

3. गाय, भैंस, घोड़ा, भेड़, बकरी, ऊंट, हाथी करोड़ों वर्षों से मनुष्य के पालतू पशु रहे हैं पुनरपि उन्होंने न मानवीय भाषा सीखी और न मानवीय व्यवहार, तब मनुष्य में ही यह विकास कहाँ से हुआ?

4. दीपक से जलता पतंगा करोड़ों वर्षों में इतना भी बौद्धिक विकास नहीं कर सका कि स्वयं को जलने से रोक ले, और मानव बन्दर से इतना बुद्धिमान् बन गया कि मंगल की यात्रा करने को तैयार है? क्या इतना जानने की बुद्धि भी विकासवादियों में विकसित नहीं हुई ? पहले सपेरा सांप को बीन बजाकर पकड़ लेता था और आज भी वैसा ही करता है परन्तु सांप में इतने ज्ञान का विकास भी नहीं हुआ कि वह सपेरे की पकड़ में नहीं आये।

5. पहले मनुष्य बल, स्मरण शक्ति एवं शारीरिक प्रतिरोधी क्षमता की दृष्टी से वर्तमान की अपेक्षा बहुत अधिक समृद्ध था, आज यह ह्रास क्यों हुआ, जबकि विकास होना चाहिए था?

6. संस्कृत भाषा, जो सर्वाधिक प्राचीन भाषा है, उस का व्याकरण वर्तमान विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा अतीव समृद्ध व व्यवस्थित है, तब भाषा की दृष्टी से विकास के स्थान पर ह्रास क्यों हुआ?

7. प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थों में भरे विज्ञान के सम्मुख वर्तमान विज्ञान अनेक दृष्टी से पीछे है, यह मैं अभी सिद्ध करने वाला हूँ, तब यह विज्ञान का ह्रास कैसे हुआ? पहले केवल अन्तःप्रज्ञा से सृष्टि का ज्ञान ऋषि कर लेते थे, तब आज वह ज्ञान अनेकों संसाधनों के द्वारा भी नहीं होता। यह यह उलटा क्रम कैसे हुआ?

भला विचारें कि यदि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास हो जाता, तो एक भी पशु पक्षी मनष्य के वश में नहीं आता। यह कैसी अज्ञानता

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

भरी सोच है, जो यह मानती है कि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास नहीं होता परन्तु शारीरिक विकास होकर उन्हें मनुष्य में बदल देता है और मनुष्यों में शारीरिक विकास नहीं होकर केवल भाषा व बौद्धिक विकास ही होता है। इसका कारण क्या विकासवादी मुझे बताएंगे।

आज विकासवाद की भाषा बोलने वाले अथवा पौराणिक बन्धु श्री हनुमान् जी को बन्दर बताएं, उन्हें वाल्मीकीय रामायण का गम्भीर ज्ञान नहीं है। वस्तुतः वानर, ऋक्ष, गृध, किन्नर, असुर, देव, नाग आदि मनुष्य जाति के ही नाना वर्ग थे। ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्रक्षेपों (मिलावट) को पहचानना परिश्रम साध्य व बुद्धिगम्य कार्य है।

उधर जो प्रबुद्धजन किसी वैज्ञानिक पत्रिका में पेपर प्रकाशित होने को ही प्रामाणिकता की कसौटी मानते हैं, उनसे मेरा अति संक्षिप्त विनम्र निवेदन है–

1. बिग बैंग थ्योरी व इसके विरुद्ध अनादि ब्रह्माण्ड थ्योरी, दोनों ही पक्षों के पत्र इन पत्रिकाओं में छपते हैं, तब कौनसी थ्योरी को सत्य मानें?
2. ब्लैक होल व इसके विरुद्ध ब्लैक होल न होने की थ्योरीज् इन पत्रिकाओं में प्रकाषित हैं, तब किसे सत्य मानें?
3. ब्रह्माण्ड का प्रसार व इसके प्रसार न होने की थ्योरीज् दोनों ही प्रकाषित हैं, तब किसे सत्य मानें?

ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इस कारण यह आवश्यक नहीं है कि हमें एक वर्गविशेष से सत्यता का प्रमाण लेना अनिवार्य हो? हमारी वैदिक एवं भारतीय दृष्टि में उचित तर्क, पवित्र गम्भीर ऊहा एवं योगसाधना (व्यायाम नहीं) से प्राप्त निष्कर्ष वर्तमान संसाधनों के द्वारा किये गये प्रयोगों, प्रक्षेपणों व गणित से अधिक प्रामाणिक होते हैं। यदि प्रयोग, प्रेक्षण व गणित के साथ सुतर्क, ऊहा का साथ न हो, तो वैज्ञानिकों का सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ हो सकता है। यही कारण है कि प्रयोग, परीक्षणों, प्रेक्षणों व गणित को आधार मानने वाले तथा इन संसाधनों पर प्रतिवर्ष खरबों डॉलर खर्च करने वाले विज्ञान के क्षेत्र में नाना विरोधी थ्योरीज् मनमाने ढंग से फूल–फल रही हैं और सभी अपने को ही सत्य कह रही हैं। यदि विज्ञान सर्वत्र गणित व प्रयोगों को आधार मानता है, तब क्या कोई विकासवाद पर गणित व प्रयोगों का आश्रय लेकर दिखाएगा?

इस कारण मेरा सम्मान के योग्य वैज्ञानिकों एवं देश व संसार के प्रबुद्ध जनों से अनुरोध है कि प्रत्येक प्राचीन ज्ञान का अन्धविरोध तथा वर्तमान पद्धति का अन्धानुकरण कर बौद्धिक दासत्व का परिचय न दें। तार्किक दृष्टी का सहारा लेकर ही सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का प्रयास करें। हाँ, अपने साम्प्रदायिक रूढ़िवादी सोच को विज्ञान के समक्ष खड़े करने का प्रयास करना अवश्य आपत्तिजनक है।

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वैदिक वैज्ञानिक अध्यक्ष वैदिक स्वस्ति पन्थान्यास भागलभीम, भीनमाल जालोर

सभा अधिकारियों द्वारा आर्य समाजों का निरीक्षण

1. आर्य समाज भीनमाल, जालोर

दिनांक 1.1.2018 को अधिकारियों का दल प्रातः 6 बजे महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर से अपने प्रचार वाहन से भीनमाल के लिए निकला जिसमें श्री सेवाराम आर्य उपप्रधान, किशन लाल गहलोत जी सदस्य, देवेन्द्र शास्त्री सदस्य यतीन्द शास्त्री, भागचन्द आर्य, राजमल आर्य, राजेश सोनी स्थानीय पदाधिकारी शामिल थे। प्रातः 10:30 बजे आर्य समाज पहुँचे जहाँ अधिकारियों के साथ मीटिंग की गई। कैश बुक, बैंक पास बुक, निर्वाचन रजिस्टर साप्ताहिक सत्संग रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर, की जाँच सेवाराम जी व किशन लाल जी द्वारा की गई। न्यूनताओं को दूर करने के निर्देश दिए गए। सभा को भेजे गये दशांश की समीक्षा की गई शेष दशांश एवं निश्चित कोटि राशि की सभा को प्राप्ति सुनिश्चित की गई। नवीन सदस्यों को जोड़कर आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने पर विचार हुआ तथा निर्धारित कार्ययोजना बनी। मध्यह में भोजन की व्यवस्था आर्य समाज के सरंक्षक श्री राजेश आर्य जी द्वारा विकसित आनन्द वन में की गई। जहाँ उन्होंने एक हजार में अधिक नीम के पेड़ कतार लगाकर हरित क्षेत्र विकसित किया है। झरना, तरणताल विश्रामकक्ष सुपथ आदि के कारण आनन्दवन दर्शनीय एव पर्यटनीय है। भोजन के पश्चात् सभा अधिकारी स्वामी अग्निव्रत जी नैष्ठिक के वेद विज्ञान मन्दिर भागल भीम पहुँचे । जहाँ स्वामी जी के साथ बैठकर आर्य समाज के सुदृढीकरण एवं विस्तार पर विचार विमर्श हुआ। स्वामी जी ने सभी को मार्ग दर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया

2. आर्य समाज सुमेरपुर पाली

दिनांक 1.1.2018 को सभी प्रतिनिधि ने वेदविज्ञान मन्दिर भागल भीम से आर्य समाज सुमेरपुर पाली के लिए प्रस्थान किया जहाँ सायंकाल मन्त्री गुलाब सिंह जी एवं उपदेशक केशव जी आदि से आर्य समाज के प्रचार कार्य एवं भावी योजनाओं पर चर्चा की गई । मंत्री गुलाब सिंह जी राजपुरोहित ने प्रचार प्रसार कार्य के लिए पूर्ण सहयोग करने की इच्छा शक्ति व्यक्त की। सभा के उपप्रधान सेवाराम आर्य एवं स्मृति भवन के मंत्री एवं सभा के अंतरग सदस्य श्री किशन लाल गहोत ने आर्य समाज की कैश बुक, बैंक पास बुक, कार्यवाही रजिस्टर, साप्ताहिक उपस्थिति रजिस्टर तथा अन्य सम्बधित अभिलेखों का निरीक्षण कर व्यवस्थित विधिवत संधारित दस्तावेजों, गतिविधियों एवं कार्यवाहियों पर प्रशसां व्यक्त की ।

- **जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता; ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। – एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश**

अजमेर में गणतंत्र दिवस आर्य वीर दल द्वारा प्रस्तुति एवं जिला कलेक्टर एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा आर्य वीर दल की शिक्षकों का सम्मान

आर्यवीर दल अजमेर संभाग स्तर सम्मानित

69 वे गणतंत्र दिवस पर पटेल मैदान में आयोजित संभाग स्तरीय कायक्रम में आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल द्वारा 1000 छात्र छात्राओं को संगीतमय सूर्यनमस्कार एवं योगासन का प्रदर्शन किया गया। संभागीय आयुक्त हनुमान सहाय मीणा जी एवं जिलाधीश गौरव जी गोयल ने संगठन आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के शिक्षक–शिक्षकाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया एवं इस अवसर पर आई जी मालिनी अग्रवाल, एस पी राजेन्द्र सिंह चौधरी एवं समस्त प्रशासन की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम में परोपकारणी सभा के कोषाध्यक्ष सुभाष नवाल भी उपस्थित थे। आर्य वीर दल के जिला अध्यक्ष विश्वास पारीक की अध्यक्षता में यह सब कार्य सम्पन हुए ।

इस कार्यक्रम में आर्यवीर दल के संभाग संचालक यतीन्द्र शास्त्री शिक्षक सुनील जोशी , कमलेश जी पुरोहित, सुशील शर्मा, अभिषेक कुमावत, प्रणव प्रजापति, पियूष कुमावत, हेंमत आर्य, मान सिंह, आर्य वीरांगना दल के शिक्षक दीप माला राजावत, अनुराधा कोमल साहू, पूजा वैदिक और सपना शर्मा ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया ।

कार्यालय सूचना

प्रधान / मंत्री जी

समस्त आर्य समाज अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान , वित्त वर्ष 1 अप्रेल 2017 से 31 मार्च 2018 का दशाशं , निश्चित कोटि, एवं आर्य मार्तण्ड , शुल्क निर्धारित प्रपत्र (वार्षिक मानचित्र) में भरकर 15.4.2018 तक अवश्य ही सभा कार्यालय को भेज देवें । निर्धारित प्रपत्र आगामी मार्तण्ड के अंकों में प्रकाशित किया जायेगा तथा सम्बन्धित आर्य समाज को डाक द्वारा प्रेषित किया जायेगा । साथ ही यह भी संसूचनीय है कि जिन संस्थाओं द्वारा राशि सीधे बैंक में चैक , डी.डी या स्थानान्तरित कर जमा करवाई जाती है वे जमा पर्ची भेज कार्यालय से रसीद अवश्य प्राप्त कर लें ।

जिनको विगत वर्ष की बैंक में जमा राशि की रसीद कारण वश प्राप्त नहीं हुई वे भी सूचना देकर या कार्यालय फोन 0141–2621879 पर सूचना अवश्य देवें ताकि रसीद प्रेषित की जा सकें

मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

- परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित कर पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. भारत में होगा इस वर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में 26–27–28 अक्तूबर, 2018 को
2. आर्य समाज चाँपानेरी अजमेर, वार्षिकोत्सव दिनांक 21–25 फरवरी 2018 को (अथर्ववेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार)

आर्य समाज भीनमाल जोलार मुख्य द्वार

आर्य समाज भीनमाल के संरक्षक राजेश आर्य द्वारा विकसित आनन्द वन का निरीक्षण करते अधिकारी

वेद विज्ञान मन्दिन भागल भीम भीनमाल में स्वामी अग्निव्रत जी के साथ सभा के अधिकारीगण

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषक:-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।